**श्री बालाजी महाराज की जय।**

## सूचना

## श्री हनुमान बालाजी चैरिटेबल कैंसर रोग निदान केन्द्र

आपको हर्ष के साथ यह सूचित किया जाता है कि श्री हनुमान बालाजी मंदिर के तत्वधान वर्तमान कार्यशील चैरिटेबल डायगनोस्टिक, डायलिसिस, फार्मेसी केन्द्र के अतिरिक्त, शीघ्र ही दूसरा चैरिटेबल कैंसर डायगनोस्टिक एवं रोग निदान का केन्द्र, कङकङडूमा इंस्टीटूशनल एरिया, नई दिल्ली में शुरु किया जा रहा है जिसके लिए 400 मीटर का एक प्लाट उपलब्ध किया गया है। आशा है कि अगले 12 महीनों में यह चैरिटेबल कैंसर रोग निवारण केंन्द्र समस्त लोगों के लिए बहुत कम लागत पर शुरु हो जाना चाहिए।

## श्री हनुमान बालाजी मंदिर विवेक विहार में प्रचारित पत्थर के विवादित 4 पैनल

आप समस्त भक्तों को ज्ञात है कि

1. श्री हनुमान बालाजी मंदिर विवेक विहार में भवन निर्माण सन् 2001 में पूर्ण हुआ और उसके बाद से श्रृंगार का कार्य पत्थर व चाँदी में सन् 2005 से हो रहा है।
2. मंदिर परिसर में पत्थर की तराशी हुई मूर्तियाँ लगीं हैं। बैसमेंट में भी पत्थर के खुदे हुए पैनल लगें हैं।
3. पैनल बनाने व पत्थर को लगाने का कार्य ठेके के साथ 2005 में दिया गया था। जब मंदिर को पूरा संकल्पना पत्थर वाले को बता दिया गया था जो अम्बाजी, गुजरात से पत्थर खरीद कर अपने कारखाने में पूरी मूर्तियों की खुदाई व गढाई करके समय समय पर मंदिर परिसर में भेजता रहता है और उसी के कारीगर उन्हें मंदिर में लगाते हैं। लगाते वक्त थोड़ी बहुत फिटिंग की झड़ाई हाथों से की जाती है। मंदिर में कोई भी मूर्ती नहीं बनाई जाती क्योंकि उसके लिए आवश्यक कारीगर व व्यवस्था यहाँ उपलब्ध नहीं हो सकती। आप सब लोगों ने यह स्वयं कभी न कभी मंदिर परिसर में देखा होगा।
4. सन् 2005 से ही पत्थर का काम चल रहा है और कोई भी विवादित पैनल या मूर्ती वहाँ नहीं लगी है। मंदिर में हिन्दू धर्म के प्रचार शिक्षा के लिए मूर्तियों का दर्शन है।
5. मंदिर में आखरी मूर्तियों की गाड़ी 16.08.2020 को आई थी जिसमें श्री कृष्ण के पैनल, गुरु स्वामीनाथन जी की मूर्ती तथा साथ में फिटिंग के पत्थर भी थे। भूलवश यह 4 विवादित पैनल, मंदिर उस गाड़ी में उसके कर्मचारियों ने रख दिए और वह आ गए और जिन्हें मंदिर में ही पत्थर वाले के कारीगरों ने उतारकर रख लिया था। जैसा बताया गया है कि उन कारीगरों ने मूर्तियों के आवरणों को खोला और पाया कि यह मूर्तियाँ मंदिर की नहीं हो सकती और मंदिर की बेसमेन्ट के एक कोने में संभालकर व कपड़े से ढक कर रख दिया और वहाँ टेबल से रोक लगा दी जिससे वह किसी की निगााह में न आए। पत्थर वालों ने इस बारे में मंदिर प्रबन्ध समिति के किसी भी सदस्य को नहीं बताया।
6. आपको ज्ञात है कि मार्च, 2020 लॉकडाउन से मंदिर पूर्णतय बंद है और किसी भी भक्त को मंदिर परिसर में आने की अनुमति नहीं है। यह पैनल न तो मंदिर में लगे, न ही सामाजिक रुप से प्रदर्शित थे। वे बेसमेन्ट में एक कोने में सुरक्षित रखे थे ताकि पत्थर वाले उन्हें अपनी सुविधानुसार वापिस ले जा सकें।
7. ऐसा अनुमान है कि मंदिर के किसी कर्मचारी या पत्थर वाले के किसी कर्मचारी ने उनकी फोटो खींचकर अपने किसी मित्र / परिजन को भेज दी जिससे यह अनआवश्यक सामाजिक मीडिया में फैल गया।
8. किसी तरह से भी धर्म, आस्था व मानवता का कोई भी उल्लघन नहीं हुआ और न ही करने का प्रयास किया गया। जब वह किसी के लिए प्रदर्शित नहीं थी तो किसी की आस्था खंड़ित हो ही नहीं सकती थी।
9. इन मूर्तियों के बारे में प्रबंध समिति को भी कोई जानकारी नहीं थी जिसका पता उनको 20.08.2020 को मंदिर में कुछ व्यक्तियों द्वारा बंद मंदिर परिसर में जबरन प्रवेश एवं उग्र प्रदर्शन के बाद चला। इसके बाद पत्थर वाले से सम्पर्क किया गया। उसने अपनी भूल को स्वीकार किया।
10. अगर इस आकस्मिक व अनजाने में हुई दुखद दुर्घटना से किसी व्यक्ति, वर्ग, धर्म, समाज इत्यादि की भावना को कोई भी आघात लगा है तो मंदिर प्रबन्ध समिति उसके लिए क्षमा प्रार्थी है।

सधन्यवाद।

मंदिर प्रबन्ध समिति